

श्री वर्द्धमान जिनपूजन

(कविवर वृन्दावनदासजी कृत)

स्थापना (छन्द मत्तगयन्द)

श्रीमत वीर हैं भव पीर भैं सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकर दंक नये हरि पंकति मौलि सुआई॥
मैं तुमको इत थापतु हों प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणा धन-धारक देव! इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(छन्द अष्टपदी)

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों।
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करों॥
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन सार केसर संग घसों।

प्रभु भव आताप निवार पूजत हिय हुलसों॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल सित शशिसम शुद्ध लीनों थार भरी।

तसु पुंज धरों अविर्द्ध पावों शिवनगरी॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे।

सो मनमथ-भंजन हेत पूजों पद थारे॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी।

पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम खण्डित मण्डित नेह दीपक जोवत हों ।
 तुम पदतर हे सुखगेह भ्रमतम खोवत हों ॥
 श्री वीर महा अतिवीर सन्मति-नायक हो ।
 जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति-दायक हो ॥
 ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा ।
 तुम पदतर खेवत भूरि आठों कर्म जरा ॥श्री. ॥
 ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थाल भरों ।
 शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिंग भेंट धरों ॥श्री. ॥
 ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जलफल वसु सजि हिमथार तन-मन मोद धरों ।
 गुण गाऊँ भवदधितार पूजत पाप हरों ॥श्री. ॥
 ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक

(राग टप्पा चाल में)

मोहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनरायजी ॥मोहि. ॥
 गरभ साढ़ सित छट्ट लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना ।
 सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजों भव तरना ॥मोहि. ॥
 ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा ।
 जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना ।
 सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना ॥मोहि. ॥
 ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा ।
 मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
 नृपकुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ॥मोहि. ॥
 ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं
 निर्वपामीति स्वाहा ।

शुक्लदशों वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छ्य करना।

केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना॥मोहि.॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिकश्याम अमावस शिवतिय पावापुरतैं वरना।

गनफनिवृन्द जजैं तित बहुविध, मैं पूजों भय हरना॥मोहि.॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(हरिगीतिका)

गनधर असनिधर, चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा,

अरु चापधर, विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा।

दुखहरन आनन्द भरन तारन-तरन चरन रसाल हैं,

सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल हैं॥

(छन्द घत्तानन्द)

जय त्रिशलानन्दन, हरिकृतवन्दन, जगदानन्दन चन्दवरं।

भवतापनिकन्दन, तन कनमन्दन, रहितसपन्दन नयनधरं॥

(छन्द त्रोटक)

जय केवलभानु कलासदनं, भवि-कोकविकाशन कन्दवनं।

जगजीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं॥

गर्भादिक मंगल-मण्डित हो, दुःख दारिद को नित खण्डित हो।

जगमाहिं तुम्ही सत पण्डित हो, तुम ही भव-भाव विहंडित हो॥

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।

लहि केवल धर्मप्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजति हो॥

पुनि आप तने गुन माहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सब ही।

तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसों मन भावत हैं॥

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषैं पग एम धरी।

झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहाँ तननं तननं॥

घननं घननं घनघंटं बजै, दृमदृम दृमदृम मिरदंग सजै ।
 गगनांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥
 धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है ।
 सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें ॥
 कइ नारि सुबीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं ।
 करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करें ॥
 इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ।
 तुम ही जग जीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारनतैं हितु हो ॥
 तुम ही सब विघ्न-विनाशन हो, तुम ही निज आनन्द भासन हो ।
 तुम ही चित-चितितदायक हो, जगमाहीं तुम्हीं सब लायक हो ॥
 तुमरे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही ।
 हमको तुम्हरी सरनागत है, तुमरे गुन में मन पागत है ॥
 प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसुकर्म नहीं नसिये ।
 तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिन्तन चित्तरतों ।
 तबलों व्रत चारित चाहत हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ॥
 तबलों सतसंगति नित्य रहों, तबलों मम संजम चित्त गहों ॥
 जबलों नहिं नाश करों अरि को, शिवनारि वरों समता धरि को ।
 यह द्यो तबलों हमकों जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥

(घत्तानन्द)

श्रीवीर जिनेशा, नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा ।

‘वृन्दावन’ ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

श्री सनमति के जुगलपद, जो पूजें धर प्रीत ।

‘वृन्दावन’ सो चतुर नर, लहैं मुक्ति नवनीत ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)